विचार बिन्दु

तुम ये कभी मत सोचो कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना तो सबसे बड़ा अधर्म है। अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य लोग निर्बल हैं। –स्वामी विवेकानंद

राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आम जन जीवन में महत्व

राजस्थान, भारत का सबसे बड़ा राज्य, अपनी विशाल भूमि, रेगिस्तानी इलाकों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां की ग्रामीण अर्थव्यवस्था न केवल राज्य की कुल जीडीपी का प्रमुख आधार है, बल्कि आम जनमानस के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग भी है। राज्य की लगभग 75 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहां कृषि, पशुपालन, डेयरी और हस्तशिल्प जैसी गतिविधियां जीवन का आधार बनाती हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्व केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी अत्यधिक है। यह आम आदमी को रोजगार, भोजन सुरक्षा और सामुदायिक एकजुटता प्रदान करती है। रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में भी राजस्थानी ग्रामीण अपनी कुशलता से जीविका चला रहे हैं, जो उनकी लचीलापन और परंपरागत ज्ञान की गवाही देता है।

राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। राज्य में धान, बाजरा, ज्वार, मूंगफली, तिल और गेहूं जैसी फसलें उगाई जाती हैं। मारवाड़ क्षेत्र में बाजरा और ज्वार प्रमुख हैं, जबकि दक्षिणी राजस्थान में मक्का और सोयाबीन। वर्षा पर निर्भर खेती होने से किसान मानसून का इंतजार करते हैं, लेकिन सिंचाई परियोजनाओं जैसे इंदिरा गांधी नहर ने स्थिति बदली है। इससे जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर जैसे शुष्क इलाकों में फसल उत्पादन बढ़ा है। आम किसान परिवार के लिए कृषि केवल आय का स्रोत नहीं, बल्कि पहचान है। एक सामान्य ग्रामीण परिवार दिन भर खेतों में मेहनत करता है। सुबह उठकर हल चलाना, बीज बोना, सिंचाई करना और कटाई करना ये कार्य पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। इससे न केवल अनाज प्राप्त होता है, बल्कि बाजार में बिक्री से नकदी भी आती है। उदयपुर जिले के एक किसान परिवार में पुरुष खेत संभालते हैं, जबकि महिलाएं घरेलू पशुओं का ध्यान रखती हैं। यह अर्थव्यवस्था परिवार को एकजुट रखती है और बच्चों को खेती के मूल्य सिखाती है। लेकिन जल संकट, मिट्टी का क्षरण और जलवायु परिवर्तन चुनौतियां पैदा करते हैं, जिनसे आम जन का जीवन प्रभावित होता है। फिर भी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था इन कष्टों के बीच आशा की किरण बनी रहती है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में खेती का यह चक्र आम जीवन को संतुलित रखता है, जहां हर फसल कटाई परिवार के उत्सव का कारण बनती है। किसान अपनी मेहनत से न केवल अपनी जरूरतें पूरी करते हैं, बल्कि अतिरिक्त उत्पाद बेचकर घर की मरम्मत या बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करते हैं।

पशुपालन राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है। राज्य में देश का सबसे बड़ा पशुधन है लगभग 5.7 करोड़ पशु। ऊंट, भेड़, बकरी, गाय और भैंस ग्रामीणों के प्रिय साथी हैं। ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है, जो मारवाड़ में परिवहन और दूध के लिए उपयोगी है। भेड़-बकरी पालन से ऊन और मांस प्राप्त होता है, जो आदिवासी समुदायों जैसे मीणा और भील के लिए मुख्य जीविका है। डेयरी उद्योग ने ग्रामीण जीवन को नई दिशा दी है। सरस जैसी सहकारी संस्था के माध्यम से किसान दूध बेचकर अच्छी आय कमाते हैं। उदाहरण के तौर पर, बीकानेर के एक चरवाहे परिवार में महिलाएं दूध निकालती हैं, पुरुष चराते हैं और बच्चे पशुओं की देखभाल सीखते हैं। इससे परिवार को नियमित आय मिलती है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च होती है। पशुपालन न केवल आर्थिक मजबूती देता है, बल्कि सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करता है। बीमारी या सूखे के समय पशु बेचकर संकट टाला जाता है। राजस्थान सरकार की योजनाएं जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) ने स्वयं सहायता समूहों के जरिए महिलाओं को पशुपालन से जोड़ा है, जिससे ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है। इस प्रकार, पशुपालन आम जन के जीवन को स्थिरता और आत्मनिर्भरता प्रदान करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पशु मेलों का आयोजन होता है, जहां न केवल व्यापार होता है बल्कि सामाजिक संबंध भी मजबूत होते हैं। एक चरवाहा परिवार के लिए पशु धन ही सब कुछ है, जो सूखे के समय भी जीवनरक्षा का आधार बनता है।

डेयरी उद्योग ने ग्रामीण जीवन को नई दिशा दी है। सरस जैसी सहकारी संस्था के माध्यम से किसान दूध बेचकर अच्छी आय कमाते हैं। उदाहरण के तौर पर, बीकानेर के एक चरवाहे परिवार में महिलाएं दूध निकालती हैं, पुरुष चराते हैं और बच्चे पशुओं की देखभाल सीखते हैं। इससे परिवार को नियमित आय मिलती है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च होती है। पशुपालन न केवल आर्थिक मजबूती देता है, बल्कि सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करता है।

हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सांस्कृतिक आयाम देते हैं। राजस्थान की प्रसिद्ध बंधेज, लहरिया, साफा, जूतियां और नीली मिट्टी के बर्तन ग्रामीण कारीगरों के हाथों से बनते हैं। जोधपुर की लकड़ी की नक्काशी, उदयपुर की मिनिएचर पेंटिंग और जयपुर की जयपुरी रजाई विश्वविख्यात हैं। ये उद्योग महिलाओं और बेरोजगार युवाओं को रोजगार देते हैं। एक सामान्य ग्रामीण महिला घर पर ही बंधेज साड़ियां बनाकर बाजार या पर्यटकों को बेचती है। इससे अतिरिक्त आय आती है, जो परिवार के पोषण में सहायक होती है। पर्यटन उद्योग ने इन हस्तशिल्पों को नई बाजार दिया है। उदाहरण के लिए, पुष्कर मेले में ग्रामीण कारीगर अपनी कला बेचते हैं, जो सालाना लाखों की कमाई करते हैं। लेकिन मशीनरी और सस्ते आयात से चुनौतियां हैं। फिर भी, जीआई टैग और सरकारी सहायता से ये उद्योग फल-फूल रहे हैं। हस्तशिल्प ग्रामीण जीवन को गौरव प्रदान करते हैं, क्योंकि ये राजस्थानी संस्कृति का प्रतीक हैं। कारीगर अपनी कला के माध्यम से पहचान बनाते हैं और सामुदायिक उत्सवों में भाग लेते हैं। इन उद्योगों से ग्रामीण युवा शहरों की ओर पलायन करने से बचते हैं और अपनी परंपराओं को जीवित रखते हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था आम जन के जीवन में सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व रखती है। गांवों में सहकारिता का भाव प्रबल है। खेती के समय पड़ोसी एक-दूसरे की मदद करते हैं, जिसे उठान-पटान कहते हैं। पशु मेलों और हाट-बाजारों में व्यापार के साथ सामाजिक मेलजोल होता है। त्योहार जैसे तीज, गणगौर और दीपावली ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़े हैं-फसल कटाई के बाद मनाए जाते हैं। महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है; वे खेती, पशुपालन और हस्तशिल्प में सक्रिय हैं। इससे लिंग समानता बढ़ती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रभाव दिखता है। ग्रामीण आय से बच्चे स्कूल जाते हैं, हालांकि ड्रॉपआउट दर चिंताजनक है। स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां और पशु उत्पाद उपयोगी हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से ग्रामीण अर्थव्यवस्था टिकाऊ है-जैविक खेती, जल संरक्षण जैसे तालाब और जोहड़। लेकिन शहरीकरण और प्रवासन चुनौतियां हैं। युवा शहरों की ओर पलायन करते हैं, जिससे ग्रामीण परिवार विघटित होते हैं। ये सामाजिक बंधन ग्रामीण जीवन को मजबूत बनाते हैं, जहां मेहनत और सहयोग ही सफलता का मूल मंत्र है।

सरकारी प्रयास ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं। मनरेगा से 100 दिनों का रोजगार मिलता है, जो खेती के साथ जोड़कर उपयोगी है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से किसानों को सालाना 6000 रुपये मिलते हैं। डिजिटल इंडिया से ई-नाम पोर्टल पर फसलें ऑनलाइन बिकती हैं। सौर ऊर्जा परियोजनाएं रेगिस्तानी इलाकों में बिजली पहुंचा रही हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह चला रहा है। इन योजनाओं से आम जन का जीवन सुधरा है। उदाहरणस्वरूप, बांसवाड़ा जिले में आदिवासी महिलाओं ने डेयरी समूह बनाकर आत्मनिर्भरता हासिल की। लेकिन क्रियान्वयन में भ्रष्टाचार और जागरूकता की कमी बाधाएं हैं। भविष्य में जलवायु अनुकूल कृषि, जैविक खेती और ईको-टूरिज्म ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयां दे सकते हैं। इन प्रयासों से ग्रामीण युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिल रहा है।

राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था आम जन जीवन का मूल आधार है। यह न केवल आर्थिक स्थिरता प्रदान करती है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक एकजुटता और पर्यावरण संतुलन भी बनाए रखती है। कठोर परिस्थितियों में भी राजस्थानी ग्रामीणों की मेहनत प्रेरणादायक है। यदि चुनौतियों का समाधान हो और सरकारी प्रयास प्रभावी हों, तो यह अर्थव्यवस्था राज्य को समृद्ध बनाएगी। आम जन के जीवन को सुखमय बनाने के लिए ग्रामीण विकास ही कुंजी है। यह अर्थव्यवस्था राजस्थान की आत्मा है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहेगी।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

सख्त निगरानी, त्वरित कार्यवाही और संवेदनशील पुलिसिंग से अपराधों की रोकथाम

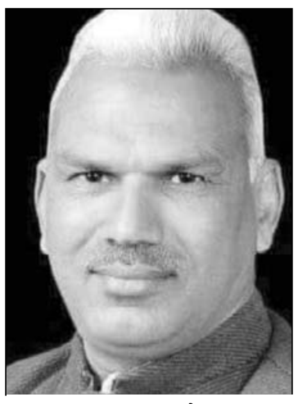

जवाहर सिंह बेढम

राजस्थान में कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में पिछले ढाई वर्षों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। यह सतत समीक्षा, स्पष्ट नीति और मजबूत प्रशासनिक इच्छाशक्ति का समन्वित प्रभाव है। विशाल भौगोलिक विस्तार और सामाजिक विविधता के साथ तेजी से विकसित हो रहे इस राज्य में अपराधों पर नियंत्रण चुनौतिपूर्ण कार्य है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल नेतृत्व में किये गये प्रयासों के परिणामस्वरूप हालिया अपराध समीक्षा के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान अब एक सुरक्षित और जवाबदेह शासन मॉडल की ओर अग्रसर है।

अपराध के समग्र परिदृश्य के अनुसार वर्ष 2023 से 2025 के बीच कुल अपराधों में लगभग 18.77 प्रतिशत की कमी दर्ज होना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इतना ही नहीं, वर्ष 2024 से 2025 के बीच भी लगभग 11.96 प्रतिशत की गिरावट यह दर्शाती है कि यह सुधार निरंतर और स्थायी है। यह स्पष्ट संकेत है कि राज्य सरकार ने कानून व्यवस्था को प्रशासनिक दायित्व के साथ इसे बेहतर बनाने को विशेष प्राथमिकता दी है।

इस परिवर्तन के केंद्र में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सक्रिय भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके नेतृत्व में पुलिस विभाग की नियमित समीक्षा बैठकों ने पूरे तंत्र को परिणामोन्मुख बनाया है। शीर्ष स्तर से लेकर थाने तक जवाबदेही सुनिश्चित की गई है। इससे कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और तत्परता आयी हैं। यही कारण है कि अपराध नियंत्रण अब तात्कालिक प्रतिक्रिया के साथ ही एक सुविचारित और योजनाबद्ध प्रक्रिया के रूप में लिया जा रहा है।

महिला सुरक्षा के क्षेत्र में भी राज्य ने महत्वपूर्ण प्रगति की है। अपराध समीक्षा के अनुसार वर्ष 2023 से 2025 के बीच कुल महिला अत्याचार के मामलों में लगभग 9.94 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। दुष्कर्म (बालिग) के मामलों में 21 प्रतिशत से अधिक गिरावट और छेड़छाड़ के मामलों में भी कमी यह दर्शाती है कि पुलिस की संवेदनशीलता और सख्ती दोनों साथ-साथ काम कर रही हैं। साथ ही व्यापक जागरूकता अभियान, महिला सुरक्षा कार्यक्रम और सामुदायिक सहभागिता की बढ़ावा देने के विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

पॉक्सो जैसे संवेदनशील मामलों में भी राज्य ने एक नई दिशा प्रस्तुत की है। इन मामलों में पुलिस को विशेष संवेदनशीलता बरतने और इन्हें सुगमता से दर्ज कर तत्काल कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं। इनकी जांच और निस्तारण की गति में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। वर्ष 2023 में बलात्कार मामलों की जांच में औसतन 107 दिन लगते थे, जो घटकर वर्ष 2026 (मार्च तक) में मात्र 42 दिन रह गए हैं। इसी प्रकार पॉक्सो मामलों में जांच का औसत समय 103 दिन से घटकर 40 दिन तक आ गया है। यह बदलाव प्रशासनिक दक्षता के साथ इन मामलों को विशेष गंभीरता से लेने और संवेदनशीलता बरतने का प्रमाण है।

इन मामलों की निस्तारण दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2023 में जहां यह दर लगभग 55 प्रतिशत थी, वहीं 2026 (मार्च तक) में यह बढ़कर 85 प्रतिशत से अधिक हो गई है। यह राष्ट्रीय औसत से भी बेहतर है। स्पष्ट है कि अब अपराध दर्ज करने के साथ समयबद्ध न्याय सुनिश्चित करना भी शासन की प्राथमिकता बन चुका है।

इस समग्र सुधार के पीछे पुलिस की सख्त निगरानी और लक्षित कार्यवाही की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। फरार और इनामी अपराधियों के विरुद्ध विशेष अभियानों में सैकड़ों अपराधियों की गिरफ्तारी, साइबर अपराधों पर नियंत्रण के लिए तकनीकी हस्तक्षेप और नशे के विरुद्ध व्यापक अभियान आदि प्रयास मिलकर एक मजबूत कानून-व्यवस्था का आधार तैयार कर रहे हैं। पुलिस तंत्र के अंदर जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए भी कठोर कदम उठाए गए हैं। संदिग्ध गतिविधियों में लिप्त पुलिसकर्मियों के विरुद्ध कार्यवाही से यह स्पष्ट संदेश है कि कानून का पालन सभी के लिए समान रूप से अनिवार्य है। समाज के साथ संवाद और जागरूकता अभियानों ने पुलिस और जनता के बीच विश्वास को मजबूत किया है। यह अपराध नियंत्रण में एक महत्वपूर्ण कारक है। तकनीकी नवाचारों का उपयोग, सोशल मीडिया मॉनिटरिंग और फेक न्यूज पर नियंत्रण जैसे कदमों ने पुलिसिंग को आधुनिक और प्रभावी बनाया है। इससे अपराधों की रोकथाम में सहायता मिलने के साथ ही सूचना के दुरुपयोग पर भी अंकुश लगा है।

समग्र रूप से देखा जाए तो राजस्थान में अपराधों में आई कमी, विशेषकर महिला अत्याचार और पोक्सो जैसे संवेदनशील मामलों में सुधार से स्पष्ट है कि राज्य सरकार ने कानून-व्यवस्था को एक समग्र दृष्टिकोण से देखा है। सख्ती के साथ संवेदनशीलता और त्वरित न्याय के साथ जवाबदेही को समान महत्व दिया गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सतत समीक्षा, पुलिस की कड़ी निगरानी और समाज की सक्रिय भागीदारी से राजस्थान एक सुरक्षित राज्य के रूप में सुशासन और न्यायपूर्ण व्यवस्था का एक आदर्श मॉडल की ओर अग्रसर है।

–जवाहर सिंह बेढम,
गृह राज्य मंत्री, राजस्थान

अनुशासनहीनता एवं सड़क दुर्घटनाएं

प्रो .कैलाश सोडाणी

रोटी, कपड़ा और मकान के पश्चात् हमारी अगली आवश्यकता परिवहन है। घर से बाहर निकलते ही हमें सड़क रूट चाहिये। थोड़ा दूर जाना हो तो वाहन भी चाहिये। आज की दुनिया में सड़क एवं परिवहन मानव जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। कुछ समय पहले तक वाहन रखना विलासिता होती थी। शहरों और गांवों के विस्तार ने कार्य-स्थल की दूरी को बढ़ावा दिया, यहीं से वाहन एक जरुरत बन गया। नागरिकों की जरुरत को देखते हुए सरकार तेजी से सड़कों का निर्माण कर रही है। यही कारण है कि भारत में सड़कों का कुल नेटवर्क लगभग 65 लाख किलोमीटर तक पहुँच चुका है, जो दुनिया में दूसरा सबसे बडा नेटवर्क है। दूसरी ओर जनता भी वाहन खरीदने में पूरी तरह से उत्साहवर्धक है। देश में 2024 में 43 लाख कारों एवं 1.89 करोड दोपहिया वाहनों की खरीद हुई। जनता की लापरवाही एवं गलती से आशीर्वाद अभिशाप में बदलता जा रहा है। अव्यवस्थित ट्राफिक प्रत्येक छोटे-मोटे शहर की आज महत्वपूर्ण समस्या है।

केन्द्रीय सड़क और परिवहन मंत्रालय के अनुसार 2023 में देश में 4,80, 583 दुर्घटनाएं हुई, 1,72,890 लोगों की जान गई। 2022 की तुलना में 4.18 प्रतिशत दुर्घटनाएं बढ़ी हैं। अन्य देशों की तुलना में भारत में अभी तो वाहनों की संख्या बहुत कम है। दुनियां के कुल वाहनों में भारत का हिस्सा मात्र एक प्रतिशत है, लेकिन सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों का प्रतिशत 11 है। नि:सन्देह स्थिति गम्भीर एवं दर्दनाक है। दुनियाँ के मुकाबले इतने कम वाहनों की स्थिति में भी इतनी अधिक सड़क दुर्घटनाएँ चिन्ता एवं चुनौती का विषय है। अभी तो हमारी आर्थिक समृद्धि में होने वाली अभिवृद्धि के साथ वाहनो की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी होना है।

भारत में सड़क परिवहन ही यातायात का महत्वपूर्ण घटक है। देश में 85प्रति यात्री यातायात एवं 60 प्रतिशत माल यातायात सड़क मार्ग से ही हो रहा है। सड़को एवं वाहनों की क्वालिटी में जबरदस्त सुधार के बावजूद आये दिन होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। देश में वाहन चालकों की मानसिकता ट्राफिक नियमानुसार गाडी चलाने की नहीं है। शॉर्टकट के चक्कर में गलत दिशा में गाडी चलाना एवं अनावश्यक हार्न बजाना आम बात है। पैदल चलने वाले राहगीर की सुरक्षा एवं सम्मान हमारे यहाँ चालक अपना विषय ही नहीं समझते हैं। अनुशासनरहित यातायात प्रदूषण को भी बढ़ाता है।

जिस सहजता से हमारे यहाँ वाहन चलाने का लाइसेन्स प्राप्त करने की व्यवस्था है और ऐसे चालक जिन्हें ट्राफिक नियमों एवं निर्देशों की जानकारी तक नहीं है, उनसे दुर्घटना होना स्वाभाविक है। हेलमेट एवं सीट बेल्ट लगाने के मामले में हम पूरी तरह लापरवाह हैं। सीट बेल्ट और हेलमेट की व्यवस्था हमारी सुरक्षा के लिए है, किसी यातायात मंत्री की सुरक्षा के लिए नहीं है, फिर भी हम नहीं लगाते हैं। वाहन को निर्धारित पार्किंग स्थल पर खडा करने में प्राय: हमें खुशी नहीं होती है। इसका एक कारण यह भी है कि प्राय: वी.आई.पी. अपनी गाडी को नॉन-पार्किंग जोन में खडी करते हुए प्रतिष्ठा का अनुभव करते हैं। फिर यही विचार आम आदमी में भी आता है।

हमारे यहाँ एक मोटर साइकिल पर प्राय:तीन मित्रों के बैठने की परम्परा हो गई है। ऐसा लगता है जैसे अपने यहाँ तीन सवारी बैठे बिना मोटर साइकिल स्टार्ट ही नहीं होती है। सोचो, सरकार इसमें क्या करें? अपने मतदाताओं की खुशी तो नहीं छीन सकती है। अव्यवस्थित ट्राफिक के कारण अनावश्यक बन रहे स्पीड ब्रेकर हमारी गति को धीमी कर रहे हैं और दुर्घटना की वजह भी बन रहे है।

सड़क दुर्घटना का एक बडा कारण देश में अतिक्रमण के प्रति जबरदस्त लगाव एवं सम्मान भी है। मोहल्ले में सबसे ज्यादा अतिक्रमण करने वाला मकान मालिक ही मोहल्ले का सबसे प्रभावशाली व्यक्ति माना जाता है। हमारे देश के दुकानदारों को माल बेचने से ज्यादा माल को सड़क पर सजाने में मजा आता है। यदि दुकानदार के पास सड़क पर सजाने के लिए सामान नहीं है तो होर्डिंग/बोड/बेंच लगाकर ही खुश होने का प्रयास करता है। बिजली एवं टेलिफोन के खम्भे भी अतिक्रमण को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

हमारे यहाँ पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम बहुत कमजोर है। परिणामस्वरूप दो एवं चार पहिया वाहनों का तेजी से इजाफा हो रहा है। उसी अनुपात से दुर्घटनाएं बढ़ ती जा रही है। इसके लिये सरकार जिम्मेदार है। सड़क दुर्घटना के मौत के इतने आंकड़ों के लिये सरकार कम, हम स्वयं ज्यादा जिम्मेदार हैं। सड़क दुर्घटनाएं हमारी अनुशासनहीनता का ही दुष्परिणाम है। एयरपोर्ट की भाँति सड़क पर भी अनुशासन चाहिये। जान जोखिम में डालकर यात्रा करना कौनसी समझदारी है? मेरा मानना है कि नियमों की अवहेलना की स्थिति में निर्धारित आर्थिक दण्ड को कई गुणा बढ़ाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। भाषण से नहीं, आर्थिक दण्ड से ही मानसिकता ठीक होगी। शान्ति से सोचिये, आखिर ट्राफिक नियमों का पालन करने में हर्ज ही क्या है? बिना देरी किये, आज से ही इस शुभ कार्य को प्रारम्भ कीजिये।

–प्रो .कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलगुरु, वर्धमान
महावीर खुला विवि, कोटा

नाकोड़ा धाम पड़ासली में संतों का मंगल प्रवेश, 35 फीट प्रतिमा बनी आकर्षण का केंद्र

राजसमंद, (निसं)। श्री नाकोड़ा धाम पड़ासली में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत जैन संतों का मंगल प्रवेश श्रद्धा और उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय पद्मभूषण रत्नसूरीश्वर महाराज, आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय निपुणरत्न सूरीश्वर महाराज एवं साध्वी भगवंत कीर्तिरेखा श्रीजी के सान्निध्य में संतों का भव्य स्वागत किया गया।

- **संतों ने प्रतिमा के दर्शन कर इसे ऐतिहासिक एवं दुर्लभ स्थल बताया**

मंगल प्रवेश के दौरान श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या उपस्थित रही, जिन्होंने जयकारों और भक्ति भाव से संतों का अभिनंदन किया। इस अवसर पर 35 फीट ऊंची नाकोड़ाजी की भव्य प्रतिमा सभी के आकर्षण का केंद्र रही। संतों ने प्रतिमा के दर्शन कर इसे ऐतिहासिक एवं दुर्लभ स्थल बताया और इसकी भव्यता की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के धार्मिक स्थल समाज में आस्था और संस्कृति के संवाहक होते हैं।

राजसमंद के श्री नाकोड़ा धाम पड़ासली में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव में जैन संतों का मंगल प्रवेश हुआ।

कार्यक्रम समिति के संयोजक मनोज जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम दिवस पर भगवान श्री पार्श्वनाथ से संबंधित चित्रों के माध्यम से भक्ति और कला का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया गया। इसके अंतर्गत भव्यातिभव्य चित्रकला स्पर्धा का आयोजन हुआ, जिसमें बच्चों और युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने भगवान पार्श्वनाथ के जीवन प्रसंगों और शिक्षाओं को रंगों के माध्यम से जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान संतों ने अपने प्रवचनों में धर्म, संयम और सेवा के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में ऐसे आयोजनों से युवा पीढ़ी को संस्कृति और धर्म से जोड़ने का अवसर मिलता है। साथ ही समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। आयोजन स्थल पर पूरे परिसर को आकर्षक सजावट से सजाया गया है, जिससे धार्मिक वातावरण और भी भक्तिमय बन गया। श्रद्धालुओं के लिए विभिन्न व्यवस्थाएं भी की गई हैं, जिससे उन्हें किसी प्रकार की असुविधा न हो। प्रतिष्ठा महोत्सव के आगामी दिनों में भी विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के भाग लेने की संभावना है। आयोजकों ने सभी से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर धर्म लाभ लेने का आग्रह किया है।

श्रीगंगानगर में पारा 43.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज

श्रीगंगानगर, (निसं)। श्रीगंगानगर में तेज गर्मी पड़ रही है। अधिकतम तापमान 43.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस सीजन का अब तक का सबसे अधिक तापमान है। तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण पूरे जिले में भीषण गर्मी का असर देखने को मिला। गर्मी का असर रात में भी जारी रहा। न्यूनतम तापमान 24 डिग्री दर्ज किया गया, जो सामान्य से 2.7 डिग्री अधिक है। मौसम विभाग के अनुसार यह इस सीजन की अब तक की सबसे गर्म रात रही।

मौसम राडार स्टेशन श्रीगंगानगर पर गुरुवार सुबह न्यूनतम तापमान 26.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इससे पहले मंगलवार को न्यूनतम तापमान 23.5 डिग्री और अधिकतम 41.5 डिग्री रिकॉर्ड किया गया था। वहीं, बुधवार को तापमान 43.7 डिग्री तक पहुंच गया। मौसम विभाग ने अगले तीन दिनों तक भीषण गर्मी और लू का अलर्ट जारी किया है। दिन के समय तेज धूप और गर्म हवाओं से लोगों को परेशानी झेलनी पड़ सकती है। 26 अप्रैल के आसपास पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मौसम में बदलाव देखने को मिल सकता है। इस दौरान आंधी और हल्की बारिश की संभावना बन रही है, जिससे तापमान में कुछ गिरावट आ सकती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 24 अप्रैल, 2026

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2083, पुष्य नक्षत्र रात्रि 8:14 तक, शूल योग रात्रि 1:24 तक, विष्टि करण प्रात: 8:06 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

रवियोग रात्रि 8:14 से आरम्भ होगा। भद्रा प्रात: 8:06 तक है। आज दुर्गाष्टमी, देवी बगलामुखी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:35 तक, लाभ-अमृत 7:35 से 10:48 तक, शुभ 12:25 से 2:02 तक, चर 5:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:59, सूर्यास्त 6:51

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। मानसिक तनाव दूर होगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या दूर होने लगेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नवीन व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना में महत्वपूर्ण सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।